लार्ड डलहौजी की गोद निषेध नीति

(Doctrine of Lapse)

लार्ड डलहौजी एक साम्राज्यवादी गवर्नर जनरल था। उसने भारत में ब्रिटिश साम्राज्य के विस्तार के लिए राज्य हड़प नीति (गोद निषेध नीति) का व्यापक प्रयोग किया। गोद निषेध नीति का अर्थ था कि कोई भी आश्रित राजा संतानहीन होने पर ब्रिटिश सरकार की आज्ञा के बिना किसी को उत्तराधिकारी बनाने के लिए बच्चा गोद नहीं ले सकता। निःसंतान राजा की मृत्यु के पश्चात आश्रित राज्य का विलय कम्पनी साम्राज्य में हो जायेगा। राज्य हड़प नीति के पक्ष में कहा जाता था कि मुगल साम्राज्य के पतन के पश्चात अंग्रेजी कम्पनी ने सर्वोच्च सत्ता के रूप में यह अधिकार प्राप्त कर लिया था।

राज्य हड़प नीति का आरम्भ :—

- राज्य हड़प नीति डलहौजी की मौलिक कल्पना नहीं थी। उसके पूर्व यह नीति गवर्नर जनरलों ने क्रियान्वित की थी।
- डलहौजी ने इस नीति का व्यापक रूप से प्रयोग किया, अतः उसका इस नीति से नाम जुड़ गया।
- यह नीति लार्ड बेंटिक के कार्यकाल में शुरू हुई। 1834 में कम्पनी के संचालकों ने कहा था कि "संतान न होने पर दत्तक पुत्र का अधिकार कम्पनी की ओर से अनुग्रह है और एक विशेष अनुकम्पा तथा स्वीकृति है, जो एक अपवाद होना चाहिए।
- 1841 ई॰ में गृह सरकार ने गवर्नर जनरल को आदेश दिया कि "यदि उपयुक्त अवसर प्राप्त हो तो नवीन प्रदेशों को कम्पनी साम्राज्य में शामिल कर लिया जाय।"
- इन्हीं आज्ञाओं के आधार पर लार्ड बेंटिक ने कछार एवं कुर्ग को कुशासन का आरोप लगाकर कम्पनी साम्राज्य में शामिल कर लिया था।
- लार्ड डलहौजी का विचार था कि अंग्रेजी कम्पनी भारत की सर्वोच्च सत्ता बन गई है। अतः देशी राज्यों में कुशासन समाप्त करने का सर्वोत्तम उपाय

यह है कि उन्हें अंग्रेजी कम्पनी राज्य में शामिल कर लिया जाये।

राज्यों का तीन श्रेणियों में विभाजन :—

- डलहौजी ने विलय नीति के उद्देश्य प्राप्ति के लिए राज्यों को 3 श्रेणियों में बाँटा - ① स्वतंत्र राज्य ② आश्रित राज्य ③ अधीनस्थ राज्य
- स्वतंत्र राज्य अर्थात वे राज्य जो कभी किसी अन्य शक्ति के अधीन नहीं रहे थे और न किसी को कर देते थे। जैसे - जयपुर, जोधपुर
- आश्रित राज्य अर्थात वे राज्य जो पहले मुगल बादशाह अथवा पेशवा को कर देते थे और अब अंग्रेजो की आधीनता मानते है। जैसे - नागपुर
- अधीनस्थ राज्य अर्थात वे राज्य जो पूर्णतः अंग्रेजी कम्पनी का आधीनता में है। जैसे - सतारा, झांसी
- डलहौजी का कहना था कि द्वितीय एवं तृतीय श्रेणी के राज्यों को दत्तक पुत्र गोद लेने के लिए कम्पनी की स्वीकृति लेना आवश्यक होगा। दत्तक उत्तराधिकार की स्वीकृति या अस्वीकृति कम्पनी का अधिकार होता है।
- निःसंतान भारतीय अधीनस्थ राज्य का विलय कम्पनी साम्राज्य में हो जाएगा।

लार्ड डलहौजी द्वारा हड़पे गये राज्य :

- लार्ड डलहौजी ने राज्य हड़पनीति के तहत 7 देशी राज्यो का विलय कम्पनी साम्राज्य मे किया था। जैसे - सतारा, सम्भलपुर, जैतपुर, बघाट, उदयपुर झांसी, नागपुर
- 1848 में सतारा के निःसंतान राजा अप्पासाहिब की मृत्यु हो गई। मृत्यु के पूर्व उन्होने अंग्रेजो की स्वीकृति के बिना एक पुत्र गोद लिया था किन्तु डलहौजी ने दत्तक पुत्र को उत्तराधिकारी नही माना और राज्य का विलय कर लिया
- 1849 में सम्भलपुर का राजा नारायणसिंह की मृत्यु हो गई। वह कोई पुत्र गोद नही ले सका। अतः डलहौजी ने कम्पनी राज्य मे विलय कर लिया
- 1850 ई. में जैतपुर के पुत्रहीन राजा की मृत्यु हो गई। डलहौजी ने कम्पनी साम्राज्य में राज्य का विलय कर लिया।
- 1850 मे पंजाब के पर्वतीय राज्य बघाट के निःसंतान राजा की मृत्यु के बाद उसे अंग्रेजी राज्य में मिला लिया।

- 1852 ई० में उदयपुर के नि:संतान राजा की मृत्यु के बाद कम्पनी साम्राज्य में विलय कर लिया।
- 1853 ई० में झांसी के राजा गंगाधरराव की मृत्यु हो गई। मृत्यु के पूर्व राजा ने दामोदरराव को गोद लिया था। डलहौजी ने उसे उत्तराधिकारी स्वीकार नहीं किया और राज्य को कम्पनी साम्राज्य में मिला लिया।
- 1853 ई० में नागपुर के राजा राघोजी की मृत्यु हो गई। राजा ने रानी को यशवन्तराव को गोद लेने हेतु कहा था किन्तु डलहौजी ने यशवंतराव को राज्य का उत्तराधिकारी मानने से इंकार कर दिया और नागपुर को कम्पनी साम्राज्य में मिला लिया।

__समीक्षा :-__ लार्ड डलहौजी की राज्य हड़पनीति का आधार अंग्रेजी राजा की सार्वभौम शक्ति था। इसके पूर्व मुगलों एवं मराठों ने स्वयं को सार्वभौम शक्ति घोषित किया था किन्तु उन्होंने गोदनिषेध को राज्यविस्तार का आधार कभी नहीं बनाया था। कुछ विद्वानों का कथन है कि देशी राज्यों में कुशासन के अंत के लिए राज्य का विलय आवश्यक था, ब्रिटिश सुशासन का लाभ वहाँ की प्रजा को प्राप्त हुआ। किन्तु कुशासन एवं सुरक्षा का आरोप राज्यविस्तार का उपायमात्र था क्योंकि राज्य हड़पनीति के कारण देशी राज्यों की जनता में व्यापक असंतोष फैला, जिसके परिणामस्वरूप 1857 ई० की विद्रोह का जन्म हुआ। नि:संदेह डलहौजी की राज्य हड़पनीति साम्राज्यवादी नीति का पोषक सिद्धान्त था।

__संदर्भ ग्रंथ सूची :-__

डॉ० उमाशंकर गुप्ता
एसो० प्रोफेसर – इतिहास
राजकीय महाविद्यालय जखिनी
वाराणसी

1. विपिनचन्द्र, आधुनिक भारत का इतिहास, ओरियन्टलब्लैकस्वान, नई दिल्ली
2. बी० एल० ग्रोवर, मेहता, यशपाल; आधुनिक भारत का इतिहास, एस० चांद, 2011
3. डॉ० ए० के० मित्तल, आधुनिक भारत का इतिहास साहित्य भवन पब्लिकेशन, आगरा